Topic 9.

भ्वादिगण लोट् लकार — 2

तुह्योस्तातङ्ङाशिष्यन्यतरस्याम् ।

आशीर्षि तुह्योस्तातङ् वा । परत्वात् सर्वादेशः भवतात् ।

लोटो लङ्वत् ।

लोटस्तामादयः, सलोपश्च ।

तस्थस्थमिपां तांतंतामः ।

ङित्सु चतुर्णां तामादयः क्रमात् स्युः ।

भवताम् । भवन्तु ।

लङ्, लिङ्, लुङ् लकारों के तस्, थस्, थ और मिप् के स्थान पर ताम्, तम्, त और अम् आदेश होते हैं। यहाँ स्थानी और आदेश समान होने के कारण यथासंख्यमनुदेशः समानाम् से क्रमशः 'तस्' के स्थान पर 'ताम्', 'थस्' के स्थान पर 'तम्', 'थ' के स्थान पर 'त' और 'मिप्' के स्थान पर 'अम्' आदेश होता है। उदाहरण के लिए लोट् के प्रथम द्विवचन में 'भव तस्' — इस स्थिति में पूर्वसूत्र से लोट् के स्थान में लङ्वत् कार्य होने के कारण 'तस्' के स्थान पर 'ताम्' आदेश होता है। 'ताम्' अनेकाल् है, अतः अनेकाल् परिभाषा से सम्पूर्ण स्थानी 'तस्' के स्थान पर आदेश होता है और इसप्रकार 'भवताम्' रूप सिद्ध होता है।

सेर्ह्यपिच्च ।

लोटः सेर्हिः, सोऽपिच्च ।

आती है: ।

अत: परस्य हेर्लुक् । भव, भवतात् । भवतम् ।
भवत ।

अदन्त अङ्ग से परे 'हि' के स्थान पर लुक् होता है अर्थात् 'हि' का लोप हो जाता है । उदाहरण के लिए 'भव हि' में अदन्त अङ्ग 'भव' से परे 'हि' का लोप होकर 'भव' रूप सिद्ध होता है ।